आधुनिक मानव से हारे निएण्डरथल मानव

ताज़ा अध्ययन से पता चलता है कि प्राचीन काल में पाए जाने वाले निएण्डरथल मानव की स्त्रियों के लिए प्रसव आज की महिलाओं के बराबर ही कष्टप्रद था। और उनके बच्चे बड़े होने में ज़्यादा वक्त भी लेते थे। ज़्यूरिश विश्वविद्यालय, स्विटज़रलैण्ड के क्रिस्टोफ ज़ोलिकोफर और उनकी टीम ने रूस और सीरिया से प्राप्त निएण्डरथल मानव के शिशुओं की खोपड़ियों के त्रि-आयामी (3-डी) चित्रों के आधार पर उक्त निष्कर्ष निकाला है।

अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि निएण्डरथल नवजात के क्रेनियम का व्यास आधुनिक मानव के शिशु के समान ही होता था। निएण्डरथल महिलाओं का प्रसव मार्ग आधुनिक महिलाओं से कहीं अधिक बड़ा होता था मगर उनके बच्चे के चेहरे की साइज़ के कारण उसे प्रसव मार्ग से बाहर आने के लिए लगभग उतने ही धक्के की आवश्यकता होती होगी। इससे एक बात और सामने आती है कि उन्हें भी प्रसव के समय सामाजिक मदद की आवश्यकता होती होगी।

अभी तक प्राप्त परस्पर विरोधी प्रमाणों के कारण यह बहस चलती रही है कि क्या निएण्डरथल मानव के बच्चे आधुनिक मानव यानी *होमो सेपिएन्स* के बच्चों की तुलना में ज़्यादा तेज़ी से वृद्धि करते थे? ऐसा माना जाता है कि हमारा अधिक लंबा बचपन शायद हमें अधिक बुद्धिमान बनाता है।

निएण्डरथल के नवजात और छोटे बच्चों की त्रि-आयामी छवि से यह रहस्योद्घाटन होता है कि वे आधुनिक बच्चों की अपेक्षा 5 प्रतिशत से 10 प्रतिशत तेज़ी से बढ़ते थे। मगर उनके शरीर का आकार बड़ा होता है, इसलिए ज़ोलिकोफर के मुताबिक, वयस्क होने में उन्हें भी उतना ही समय लगता होगा।

प्रारंभिक मानव और निएण्डरथल की तुलना में आधुनिक वयस्क का मस्तिष्क कुछ छोटा होता है। ज़ोलिकोफर कहते हैं कि मस्तिष्क के विकास में व्यतीत कम समय और कम ऊर्जा के चलते आधुनिक मानव जल्दी संतानोत्पत्ति करने लगता है जिससे अधिक बच्चे पैदा हो सकते हैं। इस तर्क से ऐसा लगता है कि हमने अपनी थोड़ी बुद्धि खोकर, छोटा और सस्ता दिमाग प्राप्त करके बदले में अधिक तेज़ प्रजनन क्षमता हासिल की है। अगर यह सही है तो ज़ोलिकोफर के अनुसार हमने निएण्डरथल को अपनी प्रजनन क्षमता और ज़्यादा बच्चों के दम पर पछाड़ा होगा, न कि इसलिए कि हम उनसे ज़्यादा होशियार थे। ***(स्रोत फीचर्स)***